पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय में "भाषा संगम– भारतीय भाषाएं और विकसित भारत" संगोष्ठी का आयोजन

नई दिल्ली। फोकस न्यूज। 4 जनवरी 2025 को पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय में "भाषा संगम – भारतीय भाषाएं और विकसित भारत" विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी भारतीय भाषा समिति (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा वित्तपोषित थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय भाषाओं की भूमिका और "विकसित भारत" के निर्माण में उनके योगदान पर चर्चा करना था। संगोष्ठी भारतीय शिक्षण मंडल और पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) के संयुक्त प्रयासों से आयोजित हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता डॉ. सच्चिदानंद जोशी (अखिल भारतीय अध्यक्ष, भारतीय शिक्षण मंडल) ने किया। उन्होंने अपने संबोधन में भाषाओं के समृद्ध उपयोग की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मातृभाषा के साथ–साथ एक अन्य भाषा का भी उपयोग करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि अनिल गुप्ता (सीए, दिल्ली प्रांत कार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और प्रसिद्ध समाजसेवी) ने भी इस अवसर पर अपना विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि बच्चे अपनी मातृभाषा में तेजी से सीखते हैं। उन्होंने इंग्लिश के महत्व पर भी प्रकाश डाला, लेकिन यह स्पष्ट किया कि भारतीय भाषाओं के अधिकार पर इसे बल नहीं देना चाहिए। उन्होंने भाषा की महत्ता पर जोर देते हुए कहा कि यह रिश्तों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्राचार्य प्रो. आर.के. गुप्ता ने स्वागत भाषण में संगोष्ठी की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि "भाषा संगम" जैसे प्रयास बहुभाषिक शिक्षा को प्रोत्साहित करते हैं और मातृभाषाओं के महत्व को उजागर करते हैं। उन्होंने ये भी कहा कि मातृभाषा मे संवाद व शिक्षा भारत को विकसित बनाने की दिशा में एक महतवपूर्ण कारक होगा। श्री अनंत विजय (एसोसिएट एडिटर) ने भारतीय भाषाओं के संवर्धन के लिए सार्वजनिक–निजी भागीदारी (च्च्ब्) के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने सरकार की भाषा नीतियों पर केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता पर भी जोर दिया। डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदानी (निदेशक, राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद) ने भाषाओं को 'सीम' और 'असीम' शब्दों के माध्यम से समझाते हुए कहा कि यदि भाषाओं को सीमित कर दिया जाए, तो वे सीमित हो जाती हैं, लेकिन यदि उन्हें व्यापक रूप से पढ़ाया जाए, तो वे असीमित बन जाती हैं। पहले सत्र का विषय "भारतीय भाषाएं और सरकारी नीतियां" था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. रवि प्रकाश टेकचंदानी ने की। इस सत्र में प्रो. गिरीश नाथ झा (अध्यक्ष, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग) ने भारतीय भाषाओं में शब्दावली निर्माण और मशीन भाषा की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने छात्रों को आयोग से जुड़ने और अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित किया।

अन्य वक्ताओं ने भारतीय भाषाओं की सरकारी नीतियों में वैज्ञानिक उपयोगिता पर विचार प्रस्तुत किए। दूसरा सत्र "भारत को विकसित बनाने में भारतीय भाषाओं की भूमिका" पर केंद्रित था। इस सत्र में प्रो. बंदना झा ने भारतीय भाषाओं के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में महत्व को रेखांकित किया। सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता श्री तडिमल्ला भास्कर गौतम और श्री जॉयदीप रॉय ने भारतीय भाषाओं में कानून की भूमिका पर जोर दिया। समापन सत्र में प्रो. अजय सिंह (भारतीय शिक्षण मंडल) ने "शब्द से मौन तक की यात्रा" विषय पर गहन चर्चा की। उन्होंने भाषाई मुद्दों और मानव जीवन में उनकी भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। विभिन सत्रों का संचालन डॉ अनिल स्वदेशी, डॉ डिंपल गुप्ता , डॉ पल्लवी और डॉ निशा ने किया। सत्र के अंत में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें शास्त्रीय नृत्य, गीत, नाटक, और कविता पाठ के माध्यम से भारत की भाषाई विविधता को प्रस्तुत किया गया।कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान और धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। यह संगोष्ठी भारतीय भाषाओं के संवर्धन और उनके महत्व पर सार्थक चर्चा का मंच साबित होगी।